www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग चेतना साहित्य-१३९

वृक्ष संपदा को घटने न दें

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

यह पुस्तिका स्वयं पढ़ें, परिवार में सबको पढ़ाएँ ।
एक सप्ताह बाद किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें ।

सौजन्य से :

₹ 2-60

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

परमपूज्य गुरुदेव की आकांक्षानुसार उनके उत्कृष्ट चिंतन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न विषयों पर अति अल्प मूल्य वाली पुस्तकों का **युग चेतना साहित्य** प्रकाशित किया जा रहा है । न्यूनतम १०० पुस्तिका मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजना चाहिए । शक्तिपीठें एक साथ अधिक साहित्य मँगाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करा सकती हैं । उदार दानी भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुस्तिकाएँ समाज में वितरित करनी चाहिए । इसी प्रकार के क्रांतिकारी चिंतन की पाठ्यसामग्री के स्वाध्याय हेतु 'युग निर्माण योजना' मासिक पत्रिका (वार्षिक शुल्क ३०) रुपया) के सदस्य बनें ।

-लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मूल्य : ३० पैसे

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष संपदा को घटने न दें

वृक्ष–वनस्पतियों और पशु–पक्षियों समेत मनुष्य हरीतिमा के आधार पर जीवित रहते हैं। पशु घास खाते हैं और पेड़ों के पत्ते चरते हैं। मनुष्य का आहार अन्न के दाने, शाक, फल व वनस्पति है। यह खाने को न मिले तो जीवित रहना संभव नहीं। माँसाहारी भी, शाकाहारी प्राणियों का ही माँस खाते हैं। इस प्रकार जीवन की निर्भरता घास स्तर की तथा वृक्ष स्तर की वनस्पतियों पर ही निर्भर मानी गई है। उसके उत्पादन और संरक्षण का पूरा ध्यान रखा जाए, तभी आवश्यकता की पूर्ति संभव है।

वृक्ष दिनभर ऑक्सीजन उगलते रहते हैं और प्राणियों के साँस द्वारा छोड़ी हुई कार्बन डाई ऑक्साइड को निगलते हैं, इसलिए उन्हें नीलकंठ की उपमा दी गई है। आग लगने तथा कारखानों से विषैली वायु का प्रदूषण प्रायः वनस्पति द्वारा ही शोधित किया जाता है।

वृक्षों का चुम्बकत्व आकाश से बादलों को

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
खींचता है और बरसने के लिए विवश करता है। जिन क्षेत्रों में वृक्ष कट जाते हैं, वहाँ वर्षा का अनुपात भी बहुत कम हो जाता है। लीबिया अब से १०० वर्ष पहले हरीतिमा से भरा हुआ था। तब वहाँ वर्षा भी खूब होती थी और घास के सहारे पशु भी पलते थे। इस बीच वहाँ के जंगल कट गए। कीमती लकड़ी यूरोप चली गई। वीरान क्षेत्र में वर्षा बंद हो गई और बहुत बड़ा इलाका रेगिस्तान बन गया। इस अभाव के कारण वहाँ कितनी दरिद्रता बढ़ी होगी, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

वृक्षों की जड़ें जमीन में गहरी जाती हैं और वर्षा के प्रवाह में बह जाने से मिट्टी को रोके रहती हैं। वृक्ष न हों तो वर्षा का पानी न तो जमीन के भीतर रुकेगा और न पकड़ के अभाव में मिट्टी यथास्थान टिकी रहेगी, बहकर नदी–नालों में चली जाएगी । भूमि की उपजाऊ ऊपर वाली परत न रहने पर न तो कृषि ठीक तरह फसल देगी और न जमीन पर घास–पात उगेगी।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
मिट्टी वर्षा के पानी के साथ बहकर जब नदी–नालों में जाती है, तो नदियों की सतह ऊपर उठती जाती है। गहराई कम होने पर पानी समतल भूमि में फैलता है और बाढ़ आने की स्थिति बन जाती है। इस बाढ़ में फसल बह जाती है और खेत कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं, बालू–रेत से भर जाते हैं।

वृक्षों की जड़ें नीचे जमीन में जाती हैं, तो अपनी पकड़ के कारण वर्षा का पानी उस भूमि में रोके रहती हैं, फलतः उस क्षेत्र में उगने वाले पेड़–पौधों को खुराक मिलती रहती है। यदि पेड़ न हों तो समतल भूमि का पानी सर्राटे से बहकर नदी–नालों में चला जाता है। जमीन एक–दो महीने में ही सूख जाती है। सर्दी के दिनों तथा गर्मी में पेड़–पौधों की जड़ें प्यासी रह सकती हैं फलतः वे सिंचाई का विशेष प्रबंध होने पर ही जीवित रहते हैं, अन्यथा प्राकृतिक रूप से उनका पालन–पोषण बंद हो जाता है।

कुँओं का, झरनों का, तालाब–बावड़ियों का

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
पानी तभी अधिक दिन टिकता है, जब पेड़ों की जड़ें ऊपर की सतह को गीली रखती हैं, अन्यथा कुँए सूख जाते हैं, उनका पानी गहराई में उतर जाता है। इन कारणों से मनुष्य और पशुओं को पानी का त्रास सहना पड़ता है।

वृक्षों के पत्ते तथा फूल ठंड के दिनों में टूट-टूट कर जमीन पर गिरते हैं। वे सूखते और सड़ते रहते हैं, उनका खाद बनता रहता है। इस प्रकार जमीन को वृक्ष ऊपर से खाद बरसाते और जड़ों से दूर-दूर तक नमी रोके रहने के कारण पानी देते रहते हैं। हरीतिमा अपने आप बनी रहती है और नए पेड़-पौधे उगते-बढ़ते रहते हैं, किंतु यदि वृक्षों को ईंधन या फर्नीचर के लिए बेहिसाब काटा जाने लगे और उनके स्थान पर नए पेड़ न उगें, तो उसके फलस्वरूप सारे क्षेत्र की भूमि ऊसर और खाली दीखने लगेगी। पुराने कटते चलें और नए उगाए न जाएँ, तो उस अभाव के कारण लकड़ी दिन-दिन कम होती चली जाएगी।

पशु पेड़ों की छाया में ही सर्दी-गर्मी और

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
वर्षा की भयंकरता से अपना बचाव करते हैं। इसलिए पेड़ न केवल पक्षियों के लिए वरन् पशुओं के लिए भी आश्रय स्थल है । हिरन, लोमड़ी, खरगोश, सियार आदि जंगलों में ही खुराक एवं आश्रय प्राप्त करते हैं ।

सभी विचारशील देशों में प्रायः एक तिहाई जमीन वन लगाने के लिए छोड़ी जाती है । वे जानते हैं कि लकड़ी के लोभ में यदि उस क्षेत्र की सफाई कर डाली गई और खेत बना लिए गए तो इस छोटे लाभ के बदले जो हानि उठानी पड़ेगी, वह कहीं अधिक होगी । जमीन की मिट्टी बह जाएगी और वहाँ खड्डे–खंदक पड़ जाएँगे जिनमें चोर–डाकू मजे से आश्रय प्राप्त करते रहें । जमुना और चंबल के इर्द–गिर्द पेड़ों को लगाने और बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया गया, फलतः किनारों के आस–पास ही लाखों एकड़ जमीन खड्ड–खंदक से भर गई और उन इलाकों में छिपने की सुविधा होने के कारण डाकुओं की असाधारण बढ़ोत्तरी हो गई । उनके भय से खुशहाल

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
किसान और व्यापारी जान बचाने के लिए शहरों में चले गए ।

कलकत्ता यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर के डा. टी. एम. दास वनस्पति शास्त्र के विशेषज्ञ हैं । उनके अनुसार एक वृक्ष अपने पचास वर्ष के जीवन काल में जितनी सेवा करता है, उसकी कीमत पैसों में जोड़ने पर १५ लाख से भी अधिक आती है । एक वृक्ष पचास वर्ष की अवधि में २.५ लाख रुपए की ऑक्सीजन देता है । भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में २.५ लाख रुपए के बराबर की खाद जितनी सहायता करता है, प्रदूषण नियंत्रण के रूप में वायु प्रदूषक अवयवों की मुफ्त सफाई ५ लाख रुपए के बराबर करता है । आर्द्रता रोकने, वर्षा करने तथा खाद्य प्रोटीनों की कीमत जोड़ने पर भी ५० वर्ष की अवधि में लगभग ५ लाख रुपए की राशि आती है । १५ लाख रुपए के बराबर वृक्ष की परोक्ष सेवाओं का मूल्यांकन करके सामान्यतया लकड़ी एवं फलों से प्राप्त होने वाली कुछ सौ रुपए के रूप में उसकी कीमत आँकी

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
जाती है ।

यह तो एक वृक्ष की बात हुई । प्रकृति प्रदत्त वृक्ष–संपदा से मिलने वाले कुल भौतिक अनुदानों का लेखा–जोखा लेने पर ज्ञात होता है कि जितनी सेवा वे वृक्ष मुफ्त करते हैं, उतनी शायद मनुष्य भी न करता हो ।

पर्यावरण संतुलन के लिए कुल भू–भाग के क्षेत्रफल का ३३ प्रतिशत वृक्ष–वनस्पतियों से ढँका होना चाहिए । कभी देश की ७० प्रतिशत भूमि वनों से आच्छादित थी । कटते कटते वह मात्र २२ प्रतिशत शेष बची है । अनिवार्य पर्यावरण संतुलन सीमा से भी यह ११ प्रतिशत कम है । दूसरे प्रगतिशील देशों में कड़ाई के साथ वन संपदा को नष्ट करने पर रोक लगा दी है । फिनलैंड में अब भी ६६ प्रतिशत भूमि में वन हैं । जापान जैसे औद्योगिक राष्ट्र जहाँ कि ईंधन की अधिक आवश्यकता उद्योगों के लिए पड़ती है, में भी ६२ प्रतिशत क्षेत्रफल पेड़ पौधों से हरा–भरा है । रूस के कुल क्षेत्रफल के ३४ प्रतिशत

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
तथा अमेरिका में ३३ प्रतिशत भाग में वन हैं । सर्वाधिक अदूरदर्शिता का परिचय अपने देशवासियों ने दिया है । अंधाधुंध वृक्षों की कटाई के कारण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई । इस स्थिति को कड़ाई से रोकना होगा तथा संतुलन के लिए वृक्षारोपण जैसे पुनीत भौतिक और आध्यात्मिक लाभ देने वाले कार्य को अविलंब आरंभ करना होगा ।

एक वृक्ष काटने से अधिक से अधिक १ हजार रुपए कीमत की जलाऊ तथा अन्य निर्माण योग्य लकड़ी प्राप्त होती है, किंतु उसके बने रहने से प्रति वर्ष ३० हजार की स्वच्छ ऑक्सीजन, उर्वरक, पानी और वायु प्रदूषण निवारण का लाभ प्राप्त होता है । कटाई का अर्थ होगा लंबे समय तक प्रति वर्ष ३० हजार रुपए के लगभग का जो योगदान प्रकृति संतुलन के रूप में मिल सकता था, उससे वंचित रह जाना ।

वृक्षों की उपयोगिता और महत्वपूर्ण भूमिका का रहस्योद्घाटन वैज्ञानिक विकास के समय

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
हुआ । विश्व के मूर्धन्य वनस्पति शास्त्री पर्यावरण विशेषज्ञ अब एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं कि वृक्ष संपदा पर समस्त मानव जाति का अस्तित्व टिका हुआ है । ये प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी हैं, जिनके न रहने से प्राणी समुदाय का जीवन संकट में पड़ जाएगा । प्रगतिशील देशों ने इस तथ्य को समझा है तथा उन्होंने अपनी वन संपदा को बचाने एवं बढ़ाने के लिए हर तरह के कारगर उपाय सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर आरंभ कर दिए हैं ।

एक व्यक्ति के जिम्मे १२ वृक्ष आते हैं । एक तरीका यह भी हो सकता है कि हर परिवार अपनी पारिवारिक सदस्यों की संख्या के हिसाब से वृक्षारोपण का दायित्व उठाएँ । मात्र पौधा लगाने को ही इतिश्री न समझा जाए । इनमें पानी–खाद देने तथा वृक्ष के रूप में विकसित होने तक समुचित देखरेख की जाए । देखरेख, सुरक्षा एवं परिपोषण की व्यवस्था न बन सकी, तो श्रम का अधिकांश भाग सरकारी प्रयासों

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
की भाँति निरर्थक चला जाएगा और अंततः असफलता हाथ लगेगी । प्रत्येक परिवार अपने–अपने हिस्से का दायित्व संभाल लें, वृक्ष लगाने और उसे परिपक्व स्थिति तक पहुँचाने का काम चल पड़े, तो कुछ ही वर्षों में अनिवार्य वृक्ष संपदा को तैतीस प्रतिशत तक पहुँचाया जा सकता है ।

वैज्ञानिकों का एक और भी कथन है कि मौसम को सुव्यवस्थित रखने में वनों की महती भूमिका है । यदि पेड़ घटते जाएँगे तो उस क्षेत्र का मौसम गड़बड़ाने लगेगा । वर्षा घट जाएगी और सर्दी–गर्मी अधिक पड़ने लगेगी । इसका मनुष्य के शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्वास्थ्यों पर बुरा असर पड़ता है ।

पूर्वजों की स्मृति में वृक्ष लगाना एक उच्चकोटि का श्राद्ध–तर्पण माना गया है । कोई माननीय व्यक्ति हमारे यहाँ आते हैं, तो उनके हाथों वृक्षारोपण की प्रथा है । इस प्रकार विवाह, पुत्र जन्म, परीक्षा में उत्तीर्ण होने, कोई आर्थिक लाभ होने के उपलक्ष्य

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
में वृक्ष लगाने का पुण्य कृत्य किया जाए, तो बहुत सराहनीय समझा जाएगा ।

औसत आवश्यकता के अनुसार ११ प्रतिशत वन क्षेत्र अपने देश में कम हैं । इसकी पूर्ति तब हो सकती है, जब हर आदमी १२ पेड़ लगाए । इसके लिए अपनी जमीन हो, तो सर्वोत्तम न हो तो सरकारी सड़कों के सहारे, रेलवे लाइन के समीप जहाँ बेकार जमीन पड़ी हो, वहाँ अपने श्रम से पेड़ लगाए जा सकते हैं । उनका स्वामित्व सरकारी रहे, तो भी हर्ज नहीं । ऊसर भूमि कितनी ही जगह पड़ी है । ग्राम-पंचायतों से पूछकर खाली जगह का इसके लिए प्रयोग किया जा सकता है । वन प्रदेशों में जहाँ लोगों ने पेड़ काट तो लिए हैं, पर फिर लगाए नहीं, वहाँ जाकर लगाने का प्रयत्न किया जाए और रखवाली के लिए बाड़ लगा दी जाए । गर्मी के दिनों में सिंचाई की एक दो वर्ष आवश्यकता पड़ती है, फिर तो उनकी जड़ें गहरी चली जाती हैं और वे स्वावलंबी हो जाते हैं ।

जो लोग स्वयं श्रम करके वृक्ष नहीं लगा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकते, वे पैसा देकर दूसरों का श्रम खरीद सकते हैं और यह कार्य दूसरों के माध्यम से करा सकते हैं । यों सरकार भी इस दिशा में कुछ काम कर रही है, पर उसी के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर हमें नहीं बैठा रहना चाहिए वरन् जन स्तर पर भी जितना कुछ बन पड़े, अधिक से अधिक करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आशा है आपको यह पुस्तिका अच्छी लगी होगी । इस पुस्तिका को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना विचार क्रांति अभियान के प्रति अन्याय है । आप भी कुछ पुस्तकें समाज में वितरित करें ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

(१) **श्रीराम झोला पुस्तकालय**–समयदान के अंतर्गत परिजन नित्यप्रति न्यूनतम एक घर में साहित्य बदलने का कार्य करें । पूज्यवर के चिंतन को घर--घर पहुँचाएँ ।

(२) **माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय**–नियमित दैनिक अंशदान (न्यूनतम ५० पैसा प्रतिदिन) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालकर १५) रुपए की युग चेतना साहित्य की ५० पॉकेट बुक्स प्रतिमाह पढ़ने के लिए बाँटें ।

(३) **गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना**–पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर समाज में वितरित कर दें । स्लिप गायत्री तपोभूमि, मथुरा से मँगा सकते हैं ।

(४) **युग चेतना साहित्य वितरण योजना**–३० पैसा मूल्य वाली १६ पेजी पॉकेट बुक्स न्यूनतम ९०० मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजकर मँगाएँ और वितरित करें ।

संपर्क सूत्र–**विचार क्रांति अभियान**
युग निर्माण योजना, मथुरा–२८१००३

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि चिंतन

विचारों की विचारा काट, आस्थाओं का परिष्कार और उल्टे को उलट कर सीधा करना ही विचार क्रांति का लक्ष्य है । सद्ज्ञान का आलोक नासमझी के अंधकार को मिटाने का कार्य संपादित करे । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । दुनिया को पलटने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए ।

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें : वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य-२), तुलसी के चमत्कारी गुण-३), स्वास्थ्य रक्षा प्रकृति के अनुसरण से ही संभव-६), युग ऋषि का अध्यात्म-युग ऋषि की वाणी में-७)५०, विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण-६) ।

पुस्तक सूची के लिए निम्न पते पर लिखें ।

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) ४०४०००, ४०४०१५

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org